SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

जालौन जिले में कृषि का स्थानिक वितरण एवं प्रतिरूप

राकेश कुमार सिंह, शोधार्थी, भूगोलशास्त्र विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
राकेश कुमार सिंह, शोधार्थी, भूगोलशास्त्र विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/10/2020
Revised on : -----
Accepted on : 08/10/2020
Plagiarism : 02% on 03/10/2020

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

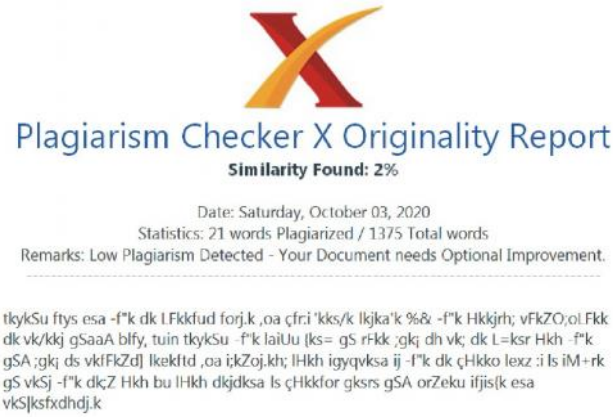

Date: Saturday, October 03, 2020
Statistics: 21 words Plagiarized / 1375 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

tkykSu ftys esa -f"k dk LFkkfud forj.k ,oa çfr:i 'kks/k lkjka'k %& -f"k Hkkjrh; vFkZO;oLFkk dk vk/kkj gSaaA blfy, tuin tkykSu -f"k laiUu {ks= gS rFkk ;gk¡ dh vk; dk L=ksr Hkh -f"k gSA ;gk¡ ds vkfFkZd] lkekftd ,oa i;kZoj.kh; lHkh igyqvksa ij -f"k dk çHkko lexz :i ls iM+rk gS vkSj -f"k dk;Z Hkh bu lHkh dkjdksa ls çHkkfor gksrs gSA orZeku ifjis{k esa vkS|ksfxdhdj.k

शोध सार

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार हैं। जनपद जालौन कृषि संपन्न क्षेत्र है तथा यहाँ की आय का स्त्रोत भी कृषि है। यहाँ के आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय सभी पहलुओं पर कृषि का प्रभाव समग्र रूप से पड़ता है और कृषि कार्य भी इन सभी कारकों से प्रभावित होते है। वर्तमान परिपेक्ष में औद्योगिकीकरण के पश्चात भी अधिकतर जनसंख्या कृषि पर ही निर्भर है। इसलिए कृषि पर नवीनतम तकनीकों को प्रयोग करने की आवश्यकता है। जिससे कृषि का विकास एवं नियोजन निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो। इसके लिए जनपद की कृषि दशाओं, स्थानिक वितरण एवं प्रतिरूप का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। इसी संदर्भ में जालौन में कृषि का स्थानिक वितरण एवं प्रतिरूप का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है ।

मुख्य शब्द

कृषि का स्थानिक वितरण एवं प्रतिरूप।

प्रस्तावना

देश के विकास एवं प्रगति में कृषि एवं उससे संबंधित क्षेत्र का महत्वपूर्ण स्थान है। जनपदीय क्षेत्र भी कृषि एक प्रधान क्षेत्र है, इसलिए यहाँ की अर्थवयवस्था का प्रमुख आधार कृषि ही है। प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन की कृषिगत विशेषताओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इसमें अध्ययन क्षेत्र की दशाओं, भूमि उपयोग, कृषि का स्थानिक वितरण एवं प्रतिरूप, तथा अध्ययन क्षेत्र की कृषिगत समस्याओं का अध्ययन कर उनका भावी समाधान ज्ञात करना है। इसी संदर्भ में शोध प्रपत्र का उद्देश्य जालौन जिले में कृषि विकास के वर्तमान स्वरूप एवं स्थानीकरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना है ।

अध्ययन क्षेत्र

जनपद जालौन एक त्रिज्याकर वाला क्षेत्र है। जो झाँसी सम्भाग के उत्तर में स्थित है। इसका अंक्षाशीय विस्तार 25°46′ से 26°27′ उत्तरी अक्षांश तक एवं देशातंरी विस्तार 78°56′ से 79°52′ पूर्वी देशातंर तक है। यह जनपद तीन नदियो यमुना, बेतवा और पहूज नदियों द्वारा तीन ओर से घिरा हुआ है। इस जनपद के उत्तर–पूर्व में इटावा, औरेया और कानपुर देहात, जनपद के दक्षिण पूर्व में हमीरपुर जनपद तथा दक्षिण में झाँसी जनपद एवं पश्चिम में मध्यप्रदेश का भिण्ड जनपद इसकी सीमा को निर्धारित करते हैं। जनपद की पूर्व से पश्चिम की लम्बाई 93 किमी. एवं उत्तर से दक्षिण की चौड़ाई 68 किमी. है। तथा क्षेत्रफल 4565 वर्ग किमी. है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 16,89972 व्यक्ति है। जिसमें स्त्री एवं पुरूषों की संख्या क्रमशः 783882 एवं 906092 है, तथा जनपद का जनसंख्या घनत्व 370 व्यक्ति/किमी.^{2} है।

प्रशासनिक दृष्टिकोण से जनपद जालौन पांच तहसील, कोंच, उरई, जालौन, काल्पी, माधौगढ़, एवं नौ विकास खण्डों, डकोर, महोवा, कदौरा, जालौन कुठौद, कोंच, नदीगाँव, माधौगढ़ और रामपुरा में बंटा है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए निम्न उद्देश्य है :

1. जालौन जिले मे कृषि दशाओं का अध्ययन करना।
2. जालौन जिले में भू–उपयोग का अध्ययन करना।
3. कृषि के स्थानिक वितरण एवं प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
4. कृषि के स्थानिक वितरण एवं प्रतिरूप को आधार मानकर वर्तमान समस्या एवं भावी समाधान ज्ञात करना।

आकड़ों का स्त्रोत एवं विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन के लिए आकंड़ो का संकलन द्वितीयक स्त्रोत जिला सांख्यकी पत्रिका से लिया गया है। आकड़ों को तीन वर्ष के औसत के आधार पर सारणीबद्ध कर विभिन्न कृषि विशेषताओं, कृषि विविधता, फसल विविधता, फसल गहनता सूचकांक एवं भूमि उपयोग समता का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

तलिका 1 : जालौन जिले में भूमि उपयोग का प्रतिरूप (हेक्ट. में)

वर्ष	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	वन	कृष्य बेकार भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह	उद्यान वृक्षों एवं झाड़ियो का क्षेत्रफल	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल
2015–16	454434	28178	1633	17388	5592	8539	39196	152	1856	351900	89244
2016–17	454434	28178	1630	23176	5442	8539	41002	145	1951	344371	143332
2017–18	454434	28178	1630	23176	5442	8539	41002	145	1951	344371	143332

(स्त्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका जनपद जालौन 2018–19)

भूमि उपयोग प्रतिरूप

जालौन जिले का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 454434 हेक्टेयर है जिसके अन्तर्गत शुद्ध बोया गया क्षेत्र 344371 हेक्टेयर है। कृषि के अतिरिक्त अन्य भूमि उपयोग 41002 हेक्टेयर है तथा ऊसर एवं कृषि के लिए अयोग्य भूमि 8539 हेक्टेयर है। क्षेत्र में वन 28178 हेक्टेयर पर एवं चारागाह के लिए उपयुक्त भूमि 145 हेक्टेयर है।

फसल प्रतिरूप

किसी प्रदेश में उगाई जाने वाली विविध फसलों के क्षेत्रीय वितरण से बने प्रतिरूप को फसल प्रतिरूप कहा जाता है। क्षेत्र मे 344371 हेक्टेयर क्षेत्र कृषि के लिए उपयोग में लाया करता है जिसके अंतर्गत, रबी, खरीफ, जायद तीनों ही फसलें उगाई जाती हैं। रबी के अंतर्गत गेहूँ, चना, मटर, मसूर, सरसों, जौ एवं खरीफ के अंतर्गत, धान,

मक्का, ज्वार, बाजरा, मूँग फसलों को उगाते हैं। जायद की प्रमुख फसलों के रूप में कद्दू, खरबूजा, लैकी, खीरा, ककड़ी, टमाटर आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है। एक अन्य तिलहन फसल पिपरमेंट का उत्पादन भी जिले में बढ़ा है। हरी मटर का उत्पादन जिले के कोंच विकासखण्ड में सर्वाधिक होता है। जिसकी मांग विदेशों में भी है। फ्रांस में इसकी मांग मुख्यता है।

तालिका 02 : जिले में विभिन्न फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल (हेक्टेयर में) औसत उपज एवं उत्पादन

फसल	क्षेत्रफल	वर्ष	औसत उपज (क्विं. हेक्टे.)	उत्पादन (मी. टन)
गेहूँ	1,58,550	2017–18	36.64	581167
मटर	80664	2017–18	17.71	113670
चना	37078	2017–18	14.12	19371
मसूर	18613	2017–18	13.18	47153
बाजरा	14529	2017–18	16.17	24311
उर्द	11412	2017–18	07.35	5811
लाही/सरसों	11371	2017–18	11.59	18043
जौ	8524	2017–18	24.07	18183
ज्वार	7053	2017–18	18.83	12919
चावल	1694	2017–18	12.64	339
मूंग	1423	2017–18	06.63	634

(स्त्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका जनपद जालौन 2018–19 रिपोर्ट)

शस्य गहनता

शस्य गहनता एक कृषि वर्ष में भूमि के अधिकतम दोहन की अवस्था को स्पष्ट करता है। यह कृषि प्रणाली तथा संसाधनों पर निर्भर करता है कि भूमि का अनुकूलतम उपयोग हो सकता है अथवा नहीं। शस्य गहनता सघन कृषि के स्वरूप का सूचकांक भी है। यह फसलों के क्षेत्रीय विस्तार में वृद्धि को भी प्रकट करता है। शस्य गहनता जितनी अधिक होगी कृषि भूमि का उपयोग उतना ही अधिक होगा।

शस्य गहनता की गणना निम्न सूत्र से की जाती है

$$\text{शस्य गहनता} = \frac{\text{सकल फसल क्षेत्रफल}}{\text{निरा फसल क्षेत्रफल}} \times 100$$

जनपद जालौन मे शस्य गहनता 115.0 प्रतिशत है। लेकिन विकास खण्ड स्तर पर इसमें विभिन्नता देखने का मिलती है। जिसे तीन श्रेणी में विभाजित किया जा सकता है।

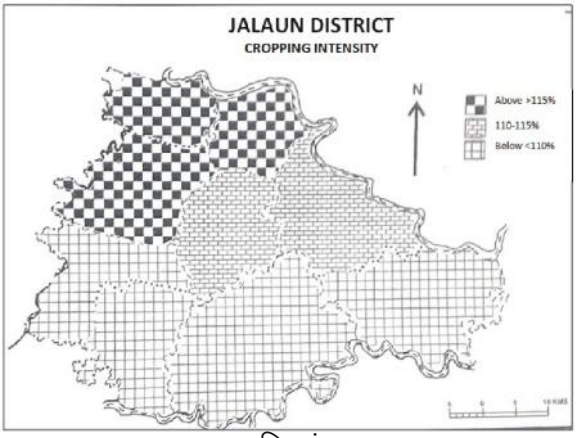

आकृति नं. 01

1. **उच्च शस्य गहनता के क्षेत्र (115 प्रतिशत से अधिक) :** यह क्षेत्र जनपद के रामपुरा, जालौन एवं कुठौन्द विकासखंडों में पाया जाता है। सर्वाधिक शस्य गहनता रामपुरा विकासखण्ड में 121.53 प्रतिशत है। इन विकासखण्डों में सिंचाई की व्यवस्था तथा दो फसली क्षेत्र की अधिकता है।
2. **शस्य गहनता के क्षेत्र (110 से 115 प्रतिशत) :** इस क्षेत्र के अतंर्गत जनपद के दो विकास खण्ड सम्मिलित है। इनमें महोवा एवं जालौन है जहा क्रमशः 111.33 प्रतिशत का 110.19 प्रतिशत शस्य गहनता पाई जाती है।
3. **निम्न शस्य गहनता के क्षेत्र (110 प्रतिशत से कम) :** इस क्षेत्र के अन्तर्गत जनपद के कोंच, कदौरा, डकोर एवं नदीगाँव विकासखण्ड सम्मिलित है जहाँ शस्य गहनता 110 प्रतिशत से कम पाई जाती है। सबसे कम शस्य गहनता नदीगाँव विकासखण्ड में 106.75 प्रतिशत पाई जाती है। क्योंकि यहाँ के धरातल का स्वरूप पहाड़ी, एवं ऊबड़–खाबड़ है तथा सिंचाई का अभाव है।

शस्य संयोजन प्रदेश

किसी प्रदेश में विभिन्न प्रकार की फसलों का क्रमबद्ध चक्रीय उत्पादन शस्य संयोजन कहलाता है। किसी क्षेत्र विशेष में एक वर्ष में अलग–अलग अनुपात में फसलों का उत्पादन ही शस्य संयोजन कहलाता है। किसी इकाई क्षेत्र में एक विशिष्ट फसल होती है और उसकी के साथ अनेक गौड़ फसलें भी पैदा की जाती हैं। इस प्रकार किसी क्षेत्र में उत्पन्न की जाने वाली प्रमुख फसलों के समूह को शस्य संयोजन प्रदेश कहते हैं। किसी भी क्षेत्र के फसलों के संयोजन का स्वरूप मुख्यतः उस क्षेत्र विशेष के भौतिक एवं सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं संस्थागत वातावरण पर निर्भर करते हैं। इसके अंतर्गत फसलों के स्थानीय महत्व के आधार पर फसलों की वरीयता निर्धारित की जाती है।

शस्य संयोजन के निर्धारण की अनेक स्वैच्छिक एवं विचलन विधियाँ प्रचलित हैं, शस्य संयोजन के अध्ययन मे सर्वप्रथम जे. सी. वीबर ने 1954 में निम्न सूत्र दिया

$$SD = \sqrt{\frac{\varepsilon d^2}{n}}$$

SD = शस्य संयोजन का प्रसरण मान
D = वास्तविक तथा सैद्धान्तिक शस्यों के प्रतिशत क्षेत्र का अंतर
N = शस्य संयोजन में फसलों की संख्या।

तालिका 03 : जनपद जालौन शस्य संयोजन प्रदेश

शस्य संयोजन	संयोजन प्रदेशों की संख्या	विकास खंडों की संख्या
तीन शस्य प्रधान क्षेत्र	3	6
चार शस्य प्रधान क्षेत्र	3	3

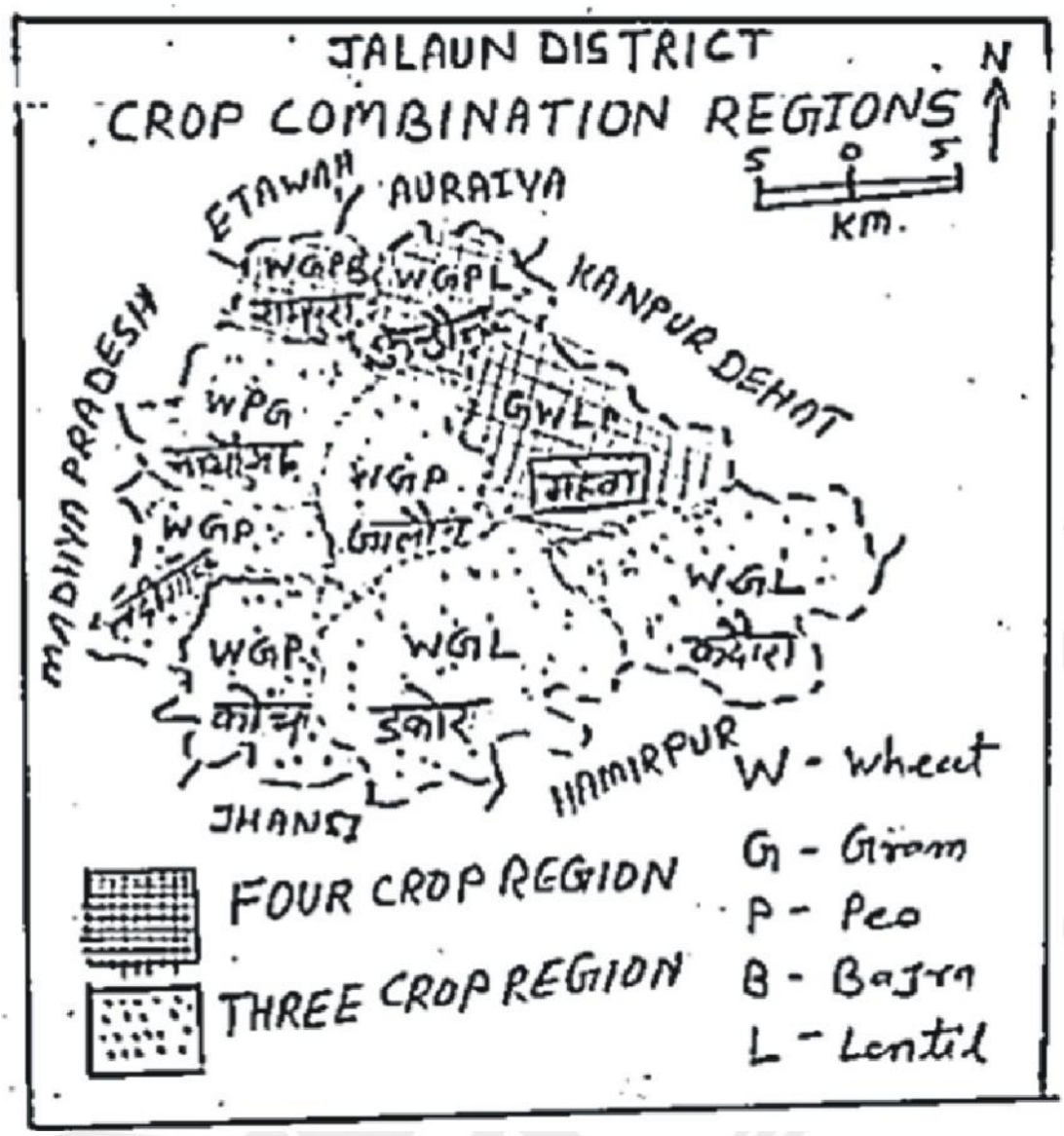

आकृति नं. 2

संदर्भ सूची

1. सांख्यिकीय पत्रिका जनपद जालौन 2018–19।
2. हुसैन माजिद, कृषि भूगोल।
3. निरंजन, प्रदीप कुमार, (2002), झाँसी संभाग में कृषि विकास का स्तर एक भौगोलिक अध्ययन।
4. बानो, शबाना, (2013), दतिया जिला का कृषि विकास नियोजन एक भौगोलिक अध्ययन।
5. भदौरिया, अभय प्रताप, (2008), जालौन जनपद में कृषि का भौगोलिक विश्लेषण एवं नियोजन।
6. कृषि विज्ञान केंद्र जालौन।
7. गाँव कनेक्शन इंरटनेट वेबसाइट।
8. स्त्रोत – कृषि विज्ञान केंद्र जालौन।

****